पशुधन स्वास्थ्य एवं प्रबंधन में सहायक मोबाईल एप्प

- **आईवीआरआई–टीकाकरण गाइड एप्प :** यह एप्प सभी प्रमुख जीवाणुओं एवं विषाणुजनित रोगों के टीकाकरण तथा विभिन्न पशु प्रजातियों, मुर्गी, पालतु कुत्ते एवं बिल्लियों में होने वाले रोग, कारक, उनके टीके, इस्तेमाल होने वाले सीरोटाइप/स्ट्रेन, टीकाकरण कार्यक्रम तथा टीका उत्पादन में शामिल सरकारी और निजी संस्थानों के बारे में जानकारी देता है।

GET IT ON Google Play

- **आईवीआरआई–डेयरी मैनेजर एप्प :** यह एप्प गाय एवं भैंस की दूध देने वाली नस्लें, उनकी पहचान, रख रखाव के विभिन्न पहलू जैसे आहार व आवास प्रबंधन, बछड़ों का रख रखाव, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन आदि के बारे में बताता हैं।
- **आईवीआरआई–कृत्रिम गर्भाधान एप्प :** यह एप्प कृत्रिम गर्भाधान से संबंधित पहलुओं जैसे–गर्मी के लक्षण व पहचान, मदचक्र की अवस्थाएं, गर्भाधान का समय, स्वच्छता उपाय, वीर्य संग्रहण व गर्भाधान के पश्चात् ध्यान रखे जाने योग्य बातों, भारत में हिमीकृत वीर्य केन्द्रों पर उपलब्ध विभिन्न नस्लों के वीर्य आदि के बारे में जानकारी देता है।
- **आईवीआरआई–शूकर राशन एप्प :** यह एप्प संतुलित शूकर राशन निर्माण तथा स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री के आधार पर शूकर की विभिन्न श्रेणियों के लिए संतुलित राशन तैयार करने में मदद करता है।

- **आईवीआरआई–पशु प्रजनन एप्प :** यह एप्प गाय एवं भैसों में प्रजनन सम्बन्धी समस्याओं जैसे गर्मी में नहीं आना, बार–बार गर्मी में आना, अस्पष्ट मदकाल, गर्भाशय में ऐंठन, कठिन प्रसव, गर्भपात, गर्भाशय का बाहर निकलना, जेर का रूकना, गर्भाशय शोथ, संक्रामक गर्भपात, कैम्पाइलो बैक्टेरिओसिस तथा संक्रामक बोवाइन रैनोट्रेकीआइटिस/संक्रामक पोस्चुलार वाल्वोवेजिनिटिस एवं उनके समाधान हेतु बनाया गया है।
- **आईवीआरआई–शूकर पालन एप्प :** यह एप्प व्यावसायिक शूकर पालन को बढ़ावा देने के लिए विद्यार्थियों, पशु–चिकित्सकों, विभिन्न विकास संगठनों और उद्यमियों को शूकर की नस्लों, आवास, आहार, प्रजनन, रख–रखाव और स्वास्थ्य प्रबन्धन की महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान करता है।

- **आईवीआरआई–वेस्ट मैनेजमेंट (अपशिष्ट प्रबंधन) गाइड एप्प :** यह एप्प कृषि, पशुधन और घरेलू गतिविधियों से निकलने वाले कचरे के प्रबंधन, खाद बनाने के विभिन्न तरीको, उनके पोषक तत्व प्रोफाइल और फसलों के लिए वर्मीकम्पोस्ट के उपयोग, बायोगैस उत्पादन के विभिन्न पहलुओं जैसे कि इसके संयंत्र, सामग्री की आवश्यकता, लाभ, वर्गीकरण, बायोडाइजेस्टर के डिजाइन, बायोगैस संयंत्र या प्लांट प्रबंधन तथा बायोगैस एवं स्लरी का उपयोग, कचरा प्रबन्धन के नियमों एवं नीतियों आदि बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करता है।

- **आईवीआरआई–जूनोसिस एप्प :** यह एप्प पशुओं और मनुष्यों के बीच स्वाभाविक रूप से संचरित होने वाले संक्रमणों और बीमारियों, इनके प्रसार, लक्षण, रोकथाम और नियंत्रण आदि के बारे में पशुचिकित्सा क्षेत्र के छात्रों, पशुचिकित्सा अधिकारीयों, पैरावेट एवं पशुपालकों के मध्य ज्ञान को विकसित करता है।

- **आईवीआरआई–वेटरनरी क्लीनिकल केयर एप्प :** यह एप्प पशुचिकित्सा क्षेत्र से संबंधित अधिकांश नैदानिक स्थितियों जैसे कि मैस्टाइटिस, ब्लोट, टीआरपी, कीटोसिस, मिल्क फीवर, रुमनल इम्पेक्शन और काफ डायरिया, गायनोकोलॉजी पयोमेट्रा, एनेस्ट्रस, रिपीट ब्रीडिंग, डिस्टोकिआ, आरएफएम, यूटेराइन टार्शन, यूटेराइन प्रोलेप्स, सरवाइको–वैजिनल प्रोलेप्स, सीओडी तथा सर्जरी(यूरोलिसिस), हर्निया, कैस्ट्रेशन, फ्रैक्चर और घाव, इनके लक्षण, निदान, उपचार, रोकथाम, नियंत्रण एवं सर्जरी से संबंधित मामलों में प्रीऑपरेटिव और पोस्टऑपरेटिव प्रक्रियाओं आदि के बारे में पशुचिकित्सकों, छात्रों, पशुचिकित्सा अधिकारियों एवं पैरावेट में ज्ञान को विकसित करता है।

- **आईवीआरआई–प्रौद्योगिकी एवं सेवाएं (टेक्नोलोजिस एवं सर्विसेज) एप्प :** इस एप्प में आईवीआरआई में उपलब्ध महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों (पशु स्वास्थ्य, पशु चारा, पशु प्रजनन और पशु प्रबंधन, सर्जिकल उपकरण, मूल्य संवंधित पशुधन उत्पाद और विविध तकनीकों) जिनको व्यावसायीकरण के लिए तैयार किया गया हैं, के बारे में बताया गया है। जिन कंपनियों ने इन तकनीकियों को खरीदा है उन सभी कंपनियों की एक सूची भी एप्प में उपलब्ध है।

- **आईवीआरआई–लैंडली पिग एप्प :** यह एप्प नयी शूकर प्रजाति लैंडली पिग के बारे में जानकारी प्रदान करता हैं। इस एप्प का उद्देश्य पशुचिकित्सकों, छात्रों, पशुचिकित्सा अधिकारियों, पैरावेट एवं उद्यमियों को इस प्रजाति के बारे में ज्ञान प्रदान करना है।

- **पशुओं में परजीवी नियंत्रण :** इस एप्प में पशुओं में होने वाले विभिन्न प्रकार के परजीवी रोगों, इनके निदान, रोकथाम एवं उपचार के बारे में जानकारी दी गयी है।

- **आग्रेर्निक एनिमल हसबेन्ड्री एप्प :** यह एप्प जैविक पशुधन प्रबंधन प्रणाली के बारे में बताता है। यह पारिस्थितिक सिद्धांतों पर आधारित एक एकीकृत प्रणाली है जो कि जैव विविधता, जैविक चक्र और जैविक मृदा गतिविधियों को बढ़ावा देती है।

GET IT ON Google Play

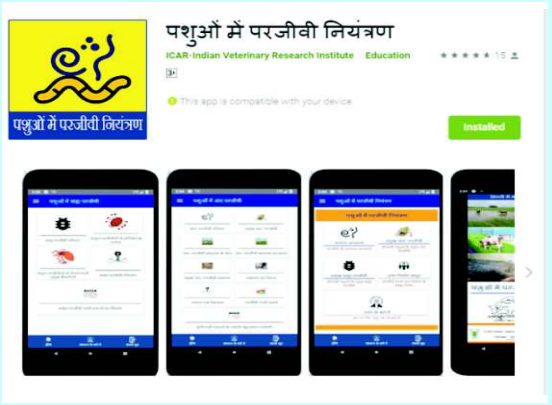

लेखक :
डा0 (श्रीमती) रूपसी तिवारी–प्रधान वैज्ञानिक, संयुक्त निदेशालय, प्रसार शिक्षा एवं प्रभारी एटिक
डा0 त्रिवेणी दत्त– संयुक्त निदेशक (शैक्षिणक) एवं डीन, नोडल ऑफिसर
डा0 अशोक कुमार तिवारी– विभागाध्यक्ष एवं प्रधान वैज्ञानिक– कास्ट– एसीएलएच परियोजना
डा0 नवनीत कौर– कास्ट– एसीएलएच परियोजना

भाकृअनुप ICAR
NAHEP
THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP
IVRI
कास्ट– एडवान्सड सेन्टर फॉर लाइवस्टॉक हैल्थ
भाकृअनुप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, समविश्वविद्यालय, इज्जतनगर–243 122, उ.प्र.
Printed by : ADIL-E-OFFICE MOB.: +91- 8395804304